मुक्तिपथ पर प्रथम चरण...

आत्मा ही है शरण

जिनश्रुत फाउण्डेशन कोर्स
लेवल - 4

"द्रव्य गुण पर्याय से जो जानते अरहंत को
वे जानते निज आतमा दृगमोह उनका नाश हो"

अध्यात्मप्रभा जैन, जैनदर्शनाचार्य
मुक्ति जैन, शास्त्री

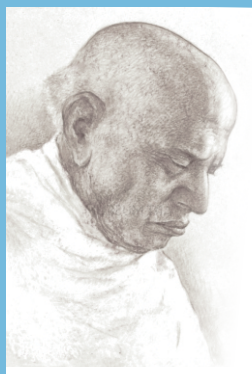

लेखक की कलम से...

जिनश्रुत बाल शिविर के निमित्त से इस पाठ्यक्रम को बनाकर प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

यह पाठ्यक्रम डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल द्वारा रचित बालबोध पाठमाला इत्यादि कृतियों को आधार लेकर आई.जी.सी.एस.ई. बोर्ड की शिक्षण पद्धति को अपनाते हुए बनाया गया है। इसका उद्देश्य बालकों में जैनधर्म के सिद्धांतों को इसप्रकार हृदय में उतारना है कि वे स्वयं जीवन में निर्णय कर सकें कि उन्हें किन देव-शास्त्र-गुरु की शरण में जाना है या क्यों और कैसे जैन सिद्धांतों को जीवन में उतारना है?

जैन सिद्धांत मात्र उनकी स्मृति का विषय न बनकर उनकी जीवनचर्या का विषय बने, यही प्रयास है।

यह शिक्षण पद्धति की नवीन प्रयोगविधि है, जिसमें छात्र स्वयं प्रयोगात्मक विश्लेषण करके निष्कर्ष को प्राप्त करते हैं।

यदि यह प्रयोग बाल शिविर में सफल होता है तो इसे आवश्यकतानुसार परिष्कृत और परिमार्जित करेंगे तथा साथ ही पूरे पाठ्यक्रम का भी इसी विधि से नवीनीकरण किया जाएगा।

कहानियों में डॉ. प्रवीणकुमार शास्त्री, इंदौर का सहयोग रहा।

इस पुस्तक के मुखपृष्ठ की सज्जा एवं पूरी पुस्तक की इलस्ट्रेशन में प्राजक्ता शाह, पुणे का अमूल्य योगदान रहा है।

कृति निर्माण में पण्डित अखिल शास्त्री, मंडीदीप तथा श्री कमल शर्मा का बहुमूल्य सहयोग रहा है।

– अध्यात्मप्रभा जैन, जैनदर्शनाचार्य

मुक्ति जैन, शास्त्री

श्री कुन्दकुन्द कहान शास्त्र प्रभावना ट्रस्ट, इन्दौर
'षष्ठम पुष्प'
मूल्य 25/-

1 द्रव्य-गुण-पर्याय

क्या सीखेंगे?

- विश्व किसे कहते हैं?
- द्रव्य एवं उसके भेद-प्रभेद
- द्रव्यों में पाए जाने वाले सामान्य व विशेष गुण
- गुण और पर्याय का स्वरूप
- उत्पाद व्यय ध्रौव्य

अध्यापक – बच्चो! क्या पूरे विश्व के तत्त्व एक मुट्ठी में समा सकते हैं?

इस प्रश्न के उत्तर को जानने के लिए सबसे पहले यह जानना होगा कि विश्व में क्या-क्या पाया जाता है। बताइये, आप अपने चारों ओर क्या-क्या देखते हैं?

छात्र – हम अपने जैसे और मनुष्यों को देखते हैं, पेड़-पौधों, पशु-पक्षी, चींटी-मक्खी-मच्छर आदि छोटे जीव-जंतु, नदी, पहाड़, आग, हवा आदि चीजों को देखते हैं।

अध्यापक – और!

छात्र – घर, मकान, दुकान, कपड़े, कार, हवाईजहाज, लकड़ी, धातु आदि इसी तरह की बहुत सारी चीजों को देखते हैं।

अध्यापक – अब इनके अतिरिक्त आप और क्या देखते हैं?

छात्र – बहुत सारा खाली स्थान।

अध्यापक – सही कहा।

अच्छा इनके अतिरिक्त आप कुछ और महसूस करते हो? क्या आपको सभी चीजें स्थिर ही दिखाई देती हैं?

छात्र – नहीं! सभी चीजें कभी स्थिर और कभी चलती या हिलती-डुलती दिखाई देतीं हैं।

अध्यापक – तब इसका भी कोई कारण अवश्य होना चाहिए।

कुछ और भी ऐसा दिखाई देता है जिसका कारण समझ नहीं आता हो?

छात्र – जी नहीं।

अध्यापक – क्या हमें वस्तुओं में कुछ परिवर्तन दिखाई देता है?

छात्र – हाँ, क्यों नहीं। सभी वस्तुएँ परिवर्तित होती रहती हैं। हम बच्चे से युवा हो जाते हैं; बीज से पौधा और पौधा बड़ा होकर वृक्ष बन जाता है, वृक्ष सूखकर लकड़ी बन जाता है और लकड़ी से टेबल बन जाती है।

अध्यापक – बस-बस! यानी परिवर्तन होता है, तो इसका कारण भी होगा ही।

अब क्या कुछ और है जो आप देखते हैं पर उसका कारण समझ नहीं आता।

छात्र – नहीं और कुछ नहीं।

अध्यापक – चलो, अब हम इन सब चीजों का विश्लेषण करते हैं। जो सारे पदार्थ आपको दिखाई देते हैं उन्हें हम दो भागों में बाँट सकते हैं –

जीव द्रव्य (लिविंग थिंग)	*पुद्गल (नॉन-लिविंग थिंग)*
➤ मनुष्य	➤ घर
➤ पेड़-पौधे	➤ मकान-दुकान
➤ पशु-पक्षी	➤ कपड़े
➤ जीव-जंतु	➤ तेल-साबुन
➤ नदी-पहाड़	➤ कार-हवाईजहाज
➤ हवा	➤ लकड़ी
➤ आग	➤ मेटल (धातु)

इस प्रकार हमें जो भी दिखाई देता है वह या तो जीव द्रव्य है या पुद्गल द्रव्य है।

छात्र – और खाली स्थान भी तो दिखाई देता है।

अध्यापक – हाँ, जो खाली स्थान दिखाई देता है वही आकाश द्रव्य है और आकाश द्रव्य में ही सभी द्रव्य रहते हैं।

जीव व पुद्गल द्रव्य के चलने और स्थिर रहने का कारण धर्म व अधर्म द्रव्य है तथा सभी द्रव्यों में परिणमन (जो परिवर्तन दिखाई देता है) का कारण काल द्रव्य है।

इस प्रकार ये छह द्रव्य हैं जिनसे यह विश्व बना है।

अब हम अपने प्रथम प्रश्न पर आते हैं कि क्या एक मुट्ठी में छहों द्रव्य समा सकते हैं? हम इसे समझते हैं – मुट्ठी हमारे शरीर का अंग है, इसमें –

हम	=	जीव द्रव्य हैं। (आत्मा)
शरीर	=	पुद्गल द्रव्य है।
मुट्ठी	=	आकाश द्रव्य में रहती है।
मुट्ठी खोलना	=	धर्म द्रव्य के निमित्त से होता है।
मुट्ठी खुली रहना	=	अधर्म द्रव्य के निमित्त से होता है।

मुट्ठी का खुलना, बंद होना, छोटा या बड़ा होना आदि परिवर्तन का कारण = काल द्रव्य है।

क्रिएटिव राइटिंग

- जो हमें दिखाई देता है, क्या उसके अतिरिक्त और भी कुछ इस विश्व में है? आपको कैसे पता?

कक्षा में चर्चा कीजिए

- एनर्जी को न तो बनाया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है, लेकिन इसे एक रूप से दूसरे रूप में बदला जा सकता है - क्या यह नियम पुद्गल के लिए भी लागू हो सकता है?

- यदि हाँ! तो क्या इस विश्व का कोई निर्माता या विध्वंशक हो सकता है?

- वैज्ञानिकों द्वारा बताए गए वेव्स (5g, 4g, इलेक्ट्रोमेग्नेटिक) कौन-से द्रव्य हैं?

इस प्रकार हम देखते हैं कि विश्व में हमें जितनी वस्तुएँ या कार्य दिखाई देते हैं वे सब इन छह द्रव्यों में ही समाहित हो जाते हैं। गंभीरता से विचार करने पर इनके अतिरिक्त हमें अन्य किसी द्रव्य की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है।

इससे सिद्ध होता है कि विश्व छह द्रव्यों के समूह को कहते हैं। इन सभी द्रव्यों की विशेष बात यह है कि ये स्व-निर्मित हैं अर्थात् इन्हें किसी ने नहीं बनाया अतः ये अनादि हैं। किसी के द्वारा नष्ट नहीं किये जा सकते हैं, अतः अनंत (सदा रहने वाले) हैं और किसी के द्वारा संचालित नहीं किये जाते हैं।

सम्पूर्ण विश्व स्वचालित स्वतंत्र वस्तु-व्यवस्था है।

ये छह प्रकार के द्रव्य हैं -

1. जीव 2. पुद्गल 3. धर्म
4. अधर्म 5. आकाश 6. काल

जीव - ज्ञान दर्शन स्वभावी आत्मा को जीव कहते हैं। यह दुनिया कैसे बनी - यह सोचने, समझने और जानने वाला जीव है। जीव के अतिरिक्त अन्य सभी द्रव्य अजीव होने से न जानते हैं और न ही सुख-दुःख का अनुभव करते हैं।

मनुष्य जीव, नारकी जीव, देव जीव, तिर्यंच जीव और यहाँ तक कि आँखों से ना दिखने वाले निगोदिया जीव - ये सब जीव हैं। विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि शरीर व आत्मा की मिली-जुली अवस्था को जीव द्रव्य कहा जाता है; पर वास्तव में शरीर में रहने वाला अमूर्त आत्मा जीव द्रव्य है।

आत्मा, इन्द्रियों के द्वारा नहीं देखा जा सकता; अतः अमूर्त है। क्षेत्र की दृष्टि से अपनी संकोच विस्तार शक्ति के कारण आत्मा छोटे-से-छोटे निगोद शरीर में भी रह सकता है और पूरे लोकाकाश में भी व्याप्त हो सकता है। लोकाकाश असंख्यात प्रदेशी है। अतः आत्मा भी असंख्यात प्रदेशी है।

इस प्रकार आत्मा ज्ञान दर्शन-स्वभावी, अमूर्त, गुणों की अपेक्षा अनंत गुणवान और प्रदेशों की अपेक्षा असंख्यात प्रदेशी है। इस विश्व में द्रव्य की अपेक्षा आत्माएँ अनंत हैं।

पुद्गल - संसार अवस्था में अपनी पाँचों इन्द्रियों के माध्यम से जीव विश्व के जितने भी पदार्थों को जानते हैं, वे सब पुद्गल ही हैं। जिसमें स्पर्श, रस, गंध व वर्ण पाया जाये, उसे पुद्गल कहते हैं।

स्पर्श, रस, गंध, वर्ण वाला होने से पुद्गल, मूर्तिक द्रव्य है; अतः हम इसे इन्द्रियों से जान सकते हैं। पुद्गल द्रव्य संख्या अपेक्षा अनंतानंत है। आकार की अपेक्षा शुद्ध पुद्गल परमाणु एक प्रदेशी है। एक पुद्गल परमाणु आकाश के जितने भाग को घेरता है, उसे प्रदेश कहते हैं। हम जिसे देख पाते हैं, वे पुद्गल परमाणुओं के समूह हैं, इन्हें स्कन्ध कहते हैं। स्कन्ध संख्यात, असंख्यात और अनंत प्रदेशी होते हैं। चैतन्य स्वभाव से रहित होने से पुद्गल जड़ है अर्थात् अजीव द्रव्य है।

कक्षा में चर्चा कीजिए

- यदि विश्व को स्व-संचालित नहीं मानेंगे, तो क्या आपत्ति आएगी?

- हमें आत्मा दिखाई नहीं देती, परन्तु सर्वज्ञ भगवान को तो दिखाई देती होगी। तो क्या आत्मा मूर्त है?

- आत्मा लोक के छोटे से भाग में भी समा जाता है और लोकाकाश में भी व्याप्त होता है - इसे किसी उदाहरण से समझाइए।

धर्म - स्वयं चलते हुए जीव व पुद्गल को चलने में जो निमित्त हो, उसे धर्म द्रव्य कहते हैं। जिस प्रकार जल, स्वयं चलती हुई मछली के चलने में निमित्त (सहायक) है। जल मछली को चलाता नहीं है; जब मछली स्वयं चलती है तब जल की उपस्थिति चलने में सहायक होती है, उसी प्रकार धर्म द्रव्य स्वयं चलते हुए जीव व पुद्गल के चलने में सहायक होता है।

जिस प्रकार मछली स्वयं चलने में समर्थ होते हुए भी जल से बाहर नहीं जा सकती; उसी प्रकार जीव और पुद्गल स्वयं गतिक्रिया में समर्थ होते हुए भी धर्म द्रव्य की सीमा से बाहर नहीं जा सकते हैं; क्योंकि धर्म द्रव्य अलोकाकाश में नहीं पाया जाता है।

धर्म द्रव्य में स्पर्श, रस, गंध व वर्ण का अत्यंत अभाव है; अतः वह अमूर्त है। धर्म द्रव्य पूरे लोकाकाश में व्याप्त होकर रहने से लोक व्यापक असंख्यात प्रदेशी है। संख्या की अपेक्षा से धर्म द्रव्य एक ही है।

अधर्म द्रव्य - जिस प्रकार वृक्ष की छाया पथिकों को ठहराने में निमित्त होती है; उसी प्रकार स्वयं गमनपूर्वक ठहरने वाले जीवों और पुद्गलों को ठहराने में जो निमित्त हो, वही अधर्म द्रव्य है।

धर्म द्रव्य के समान अधर्म द्रव्य भी अमूर्त है, असंख्यात प्रदेशी है और संख्या की अपेक्षा से एक ही है। अधर्म द्रव्य भी लोकाकाश की सीमा में ही रहता है; अतः उसके निमित्त से सिद्ध भगवान अनंत काल तक लोकाकाश के अग्रभाग में स्थित रहते हैं। इस प्रकार सभी जीव, पुद्गल, धर्म व अधर्म द्रव्य लोकाकाश में ही पाए जाते हैं।

आकाश द्रव्य - जो जीवादि छहों द्रव्यों के अवगाहन (रहने) में निमित्त है, वह आकाश द्रव्य है। आकाश विशुद्ध क्षेत्ररूप द्रव्य है।

अवगाहना शक्ति के कारण लोक के समस्त द्रव्य आकाश में समा जाते हैं। समस्त द्रव्यों के आकाश में एक साथ रहने में कोई बाधा नहीं आती है। आकाश सप्रदेशी है और ऊपर-नीचे-तिरछे सब ओर फैला हुआ है। आकाश अमूर्त द्रव्य है।

क्रिएटिव राइटिंग

- क्या आकाश के सबसे छोटे भाग में भी छहों द्रव्य उपस्थित हैं? सिद्ध कीजिये।
- क्या अंतरिक्ष के वैक्यूम (निर्वात) में भी यह 6 द्रव्य पाए जाते हैं? सिद्ध कीजिये?

आकाश द्रव्य एक है, फिर भी पाँचों द्रव्यों की उपस्थिति और अनुपस्थिति की अपेक्षा उसके दो भेद कहे जाते हैं - लोकाकाश व अलोकाकाश। जितने स्थान में अन्य पाँचों द्रव्य पाए जाते हैं उसे लोकाकाश कहते हैं। ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक व अधोलोक - ये तीनों लोकाकाश में ही पाए जाते हैं।

जहाँ आकाश के अतिरिक्त पाँचों द्रव्य नहीं पाए जाते, उसे अलोकाकाश कहते हैं।

इसप्रकार संख्या अपेक्षा आकाश एक ही है, प्रदेश की अपेक्षा अनंत प्रदेशी है, अमूर्त है और अनादि-अनंत है।

काल द्रव्य - काल द्रव्य जगत के समस्त पदार्थों के परिणमन में निमित्त मात्र है अर्थात् पदार्थों में प्रतिसमय जो बदलाव होता रहता है; वह काल द्रव्य के निमित्त से होता है। यदि काल द्रव्य नहीं होता तो समस्त पदार्थ कूटस्थ सर्वथा नित्य हो जाते। स्पर्श, रस, गंध व वर्ण नहीं पाए जाने से काल द्रव्य भी अमूर्त द्रव्य है।

काल द्रव्य एक प्रदेशी द्रव्य है। पुद्गल के समान काल के अणु मिलकर स्कंध रूप नहीं होते हैं अतः लोकाकाश के प्रत्येक प्रदेश पर रत्नों की राशि के समान एक-एक कालाणु रहता है और लोकाकाश के असंख्यात प्रदेशों के समान कालाणु भी संख्या की अपेक्षा असंख्यात द्रव्य है।

यद्यपि इन कालाणुओं के निमित्त से ही सभी द्रव्यों की अवस्था बदलती रहती है; तथापि काल द्रव्य स्वयं निष्क्रिय द्रव्य है अर्थात् एक कालाणु एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में नहीं जाता है।

काल द्रव्य एकप्रदेशी होने के कारण अस्तिकाय द्रव्य नहीं है। अन्य पाँचों द्रव्य अस्तिकाय (बहु-प्रदेशी द्रव्य) कहलाते हैं। काल द्रव्य की पर्याय को समय कहते हैं। काल द्रव्य अनंत समय वाला है। यद्यपि वर्तमान काल एक समय मात्र है; तथापि भूत-भविष्य की अपेक्षा उसके अनंत समय हैं।

द्रव्य	जीव	पुद्गल	धर्म	अधर्म	आकाश	काल
मूर्त /अमूर्त	अमूर्त	मूर्त	अमूर्त	अमूर्त	अमूर्त	अमूर्त
संख्या	अनंत	अनंतानंत	एक	एक	एक	असंख्यात
प्रदेश	असंख्यात	एक/संख्यात/ असंख्यात/ अनंत	असंख्यात	असंख्यात	अनंत	एक
अस्तिकाय	है	है	है	है	है	नहीं
क्षेत्र	लोकाकाश	लोकाकाश	लोकाकाश	लोकाकाश	लोक+अलोक	एक प्रदेश मात्र

कक्षा में चर्चा कीजिए

- गतिक्रिया - इसका अभिप्राय मात्र चलने और रुकने से नहीं है। इस वाक्य को स्पष्ट कीजिए।
- अलोकाकाश में अन्य कोई द्रव्य नहीं पाए जाते - तब अलोकाकाश में परिणमन कैसे होता है?
- लोकाकाश के एक-एक प्रदेश पर स्थित एक-एक कालाणु वर्तना लक्षण वाला निश्चय काल द्रव्य है तथा समय, घंटा, दिन इत्यादि व्यवहार से काल कहे जाते हैं।
- जीव और पुद्गल मात्र दो ही द्रव्य क्रियावती शक्ति वाले द्रव्य हैं।
- धर्म, अधर्म, आकाश और काल निष्क्रिय द्रव्य हैं उनका परिणमन कैसे होता है?

क्रिएटिव राइटिंग

- जो नीला-नीला दिखता है; वह आकाश नहीं पुद्गल द्रव्य की पर्याय है - सिद्ध कीजिये।

- आकाश अनेक द्रव्यों को एक साथ अवगाहन दे सकता है - इसको आपके जीवन में दिखते हुए उदाहरणों द्वारा समझाइये।

- यदि आप विश्व के निर्माता होते, तो कौन-से द्रव्यों को जोड़ते या हटाते? और क्यों?

- काल द्रव्य के अभाव में क्या होगा?

स्वयं को चुनौती दें

- जीव द्रव्य अलोकाकाश में नहीं जा सकता - सिद्ध कीजिये।
- स्वयं काल द्रव्य के परिणमन में कौन निमित्त है?
- पुद्गल द्रव्य एक-प्रदेशी है, तो वह अस्तिकाय कैसे हुआ?

क्या आप जानते हैं?

- सभी द्रव्यों में एक दूसरे को स्थान देने की शक्ति है।
- पाँचों इन्द्रियों से जो कुछ भी जाना जाता है वह सब पुद्गल है।
- जीव द्रव्य भी अमूर्तिक होने से इन्द्रिय ज्ञान का विषय नहीं है। जो दिखता है वह पुद्गल (शरीर) है।
- प्रत्येक द्रव्य अपना-अपना कार्य अपनी स्वशक्ति (उपादान) से करता है, दूसरे द्रव्य उनमें निमित्त मात्र हैं।

छात्र – गुरुजी आप कह रहे हैं कि सभी द्रव्य अनादि-अनंत होने से कभी नष्ट नहीं होते; पर हम तो जीवों को मरते देखते हैं और संसार की सब वस्तुओं को अर्थात् पुद्गल से बनी चीजों को बनते एवं टूटते (बिगड़ते) देखते हैं और शास्त्रों में भी कहा है कि एक दिन प्रलय आएगा और सब नष्ट हो जायेगा।

अध्यापक – बच्चो! अभी मैंने तुम्हें छह द्रव्यों का स्वरूप बताया है। द्रव्यों के सामान्य स्वरूप को नहीं जानने से यह आशंका खड़ी हुई है।

वस्तुतः किसी भी द्रव्य का कभी भी नाश नहीं होता है; मात्र उनकी पर्याय बदलती (पलटती) है।

छात्र – ये पर्याय क्या होती है?

अध्यापक – हाँ-हाँ बताता हूँ। पर पहले हम गुणों की चर्चा करेंगे। देखो! गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं। अर्थात् समस्त द्रव्य गुणों से भरे हुए हैं, फिर प्रश्न उठता है कि गुण किसे कहते हैं, जिनसे द्रव्य बना हुआ है।

जो द्रव्य के सम्पूर्ण भागों (प्रदेशों) में और उसकी सम्पूर्ण अवस्थाओं (पर्याय) में पाया जाये, उसे गुण कहते हैं। जैसे ज्ञान आत्मा का गुण है और वह आत्मा के सम्पूर्ण भागों में और सम्पूर्ण अवस्थाओं (निगोद से मोक्ष तक) में सदा पाया जाता है।

छात्र – गुरुजी! आत्मा में ज्ञान के अतिरिक्त और कितने गुण हैं?

अध्यापक – आत्मा में अनंत गुण हैं। सभी द्रव्यों में अपने-अपने अनंत गुण हैं। जैसे आत्मा अनंत गुणों का अखंड पिंड है वैसे ही सभी द्रव्य अनंत-अनंत गुणों के अखंड पिंड हैं।

छात्र – गुरुजी! द्रव्यों में रहने वाले गुणों में और क्या विशेषताएँ होती हैं?

अध्यापक –

प्रत्येक द्रव्य में अनंत गुण होते हैं और वे स्वतःसिद्ध हैं अर्थात् उनके होने के लिए किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं होती है।

गुण सदा द्रव्य के आश्रय से रहते हैं और स्वयं निर्गुण होते हैं अर्थात् जैसे द्रव्य में गुण पाए जाते हैं; वैसे गुण में अन्य गुण नहीं पाए जाते हैं।

एक द्रव्य में अनंत गुणों के एक साथ रहने में कोई बाधा नहीं आती है। साथ ही प्रत्येक द्रव्य के अनंत गुण कभी कम या ज्यादा (न्यूनाधिक) नहीं होते हैं अर्थात् द्रव्य में अतीत काल में जितने और जो गुण थे वर्तमान में भी उतने और वे ही गुण हैं और भविष्य में भी वे उतने व वैसे ही रहेंगे। इसलिए गुण द्रव्य के साथ में रहने से सहभावी भी कहलाते हैं।

''यह वही है'' - ऐसे ज्ञान का कारण, गुणों का त्रिकाल एक-सा रहना ही है।

द्रव्य में यद्यपि अनंत गुण साथ-साथ रहते हैं; तथापि वे सदा एक-दूसरे से भिन्न ही रहते हैं। जैसे आत्मा में ज्ञान, दर्शन, सुख आदि और आम में पीला रंग, मृदु स्पर्श, मीठा रस, सुगंध - ये सब एक ही समय में होकर भी एक-दूसरे रूप कभी नहीं होते हैं।

द्रव्य का गुणों से अलग कोई भी अस्तित्व नहीं है। ऐसा भी कह सकते हैं कि द्रव्य को गुणों से ही पहचाना जाता है।

गुण नित्य भी हैं और अनित्य भी। वे सदा उसी गुण रूप रहते हैं अतः नित्य हैं और उसकी पर्यायें बदलती रहती हैं अतः अनित्य हैं। नित्य बदलते हुए भी वे अपने स्वभाव (गुण) को नहीं छोड़ते हैं; जैसे - हरा आम पकने पर पीला हो जाता है; पर वह अपने वर्ण नामक गुण को नहीं छोड़ता। अतः गुण नित्य होते हैं।

गुण नित्य है; अतः उनमें विजातीय परिवर्तन नहीं होता है अर्थात् जीव का ज्ञान गुण पुद्गल के स्पर्श, रस, रूप नहीं होता; परन्तु गुणों में सजातीय परिवर्तन प्रतिसमय होता ही है , जैसे ज्ञान गुण की मति-श्रुतादि अवस्थाएँ और पुद्गल पदार्थों में कड़क फल कालांतर में मुलायम हो जाता है और फल का हरा रंग पीला हो जाता है ।

छात्र - गुरुजी, जब द्रव्य के बिना गुण नहीं होते और गुणों के बिना द्रव्य नहीं होता; इसलिए दोनों अभिन्न हैं और द्रव्य के नित्यनित्यामक होने से गुण भी नित्यनित्यामक है तो दोनों को एक ही क्यों नहीं कहा गया है ?

अध्यापक - नहीं, नहीं! द्रव्य और गुण पूरी तरह से अभेद, अभिन्न नहीं हैं। उनमें कथंचित् भेद भी है।

गुण स्वभाव है और द्रव्य स्वभाववान है।

द्रव्य में गुण रहते हैं; अतः दोनों में आधार-आधेय सम्बन्ध है। जैसे- 29 राज्यों का समूह भारत देश है। भारत देश इन राज्यों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है; पर एक पाँच या दस राज्य देश नहीं है; बल्कि सम्पूर्ण राज्यों का समूह देश है। उसी प्रकार अनंत गुणों का समुदाय द्रव्य है। द्रव्य इन गुणों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है; फिर भी कुछ गुणों को द्रव्य नहीं कह सकते हैं।

गुण	द्रव्य
➤ स्वभाव	➤ स्वभाववान
➤ व्याप्य	➤ व्यापक
➤ आधेय	➤ आधार

कक्षा में चर्चा कीजिए

- यदि आत्मा के अनंत गुण स्व-सिद्ध हैं, तब हमारे सारे गुण प्रकट क्यों नहीं हैं?
- धर्म, अधर्म, आकाश और काल भी अनंत गुण संपन्न हैं।
- द्रव्य पहले आया या गुण?
- द्रव्य और गुणों के प्रदेश भिन्न-भिन्न नहीं हैं।
- द्रव्य और गुण में लक्षण भेद न करने से क्या दोष आएगा?

क्रिएटिव राइटिंग

- गुण नित्यानित्य कैसे होते हैं - सिद्ध कीजिये।
- द्रव्य और गुणों को पूर्णतः भिन्न या पूर्णतः अभिन्न मानने में क्या आपत्ति आएगी?
- यदि गुण सम्पूर्ण भागों में नहीं पाए जायेंगे, तो क्या होगा?
- यदि गुण कुछ काल में रहेंगे तो क्या होगा?
- क्या गुणों के वर्णन बिना द्रव्य की पहचान हो सकती है?

स्वयं को चुनौती दें

> किसी एक गुण से सम्पूर्ण द्रव्य की पहचान हो सकती है? स्पष्ट कीजिये।

उपर्युक्त विशेषताओं से युक्त गुण दो प्रकार के होते हैं - सामान्य गुण व विशेष गुण।

सामान्य गुण - जो गुण समान रूप से सभी द्रव्यों में पाए जायें, वे सामान्य गुण कहलाते हैं। सामान्य गुण अनंत हैं, पर मुख्यत: छह सामान्य गुणों के माध्यम से द्रव्यों को अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

1. अस्तित्व गुण
2. वस्तुत्व गुण
3. द्रव्यत्व गुण
4. प्रमेयत्व गुण
5. अगुरुलघुत्व गुण
6. प्रदेशत्व गुण

1. अस्तित्व गुण - जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कभी नाश न हो; उसे अस्तित्व गुण कहते हैं।

प्रत्येक द्रव्य में अस्तित्व गुण है। अतः प्रत्येक द्रव्य की सत्ता स्वयं से है। अतः सभी द्रव्यों को न तो किसी ने बनाया है और न ही उन्हें कोई नष्ट कर सकता है। वे अनादि-अनंत हैं। सत् का कभी विनाश नहीं होता और असत् का कभी उत्पाद नहीं होता।

2. वस्तुत्व गुण - जिस शक्ति के कारण द्रव्य में प्रयोजनभूत क्रिया हो, उसे वस्तुत्व गुण कहते हैं। इस गुण की मुख्यता से ही द्रव्य को वस्तु कहा जाता है। लोक में कोई भी वस्तु पर के प्रयोजन की नहीं है; अपितु प्रत्येक वस्तु अपने- अपने प्रयोजन से युक्त है; वस्तुत्व गुण यह बताता है। वस्तुत्व गुण बताता है कि कोई भी द्रव्य निरर्थक नहीं है।

3. द्रव्यत्व गुण - जिस शक्ति के कारण द्रव्य की अवस्था निरंतर बदलती रहे , उसे द्रव्यत्व गुण कहते हैं । द्रव्यत्व गुण की मुख्यता से ही वस्तु को द्रव्य कहते हैं।

द्रव्यत्व गुण के कारण किसी भी द्रव्य को परिणमन करने में दूसरे द्रव्य की अपेक्षा नहीं है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि द्रव्यत्व गुण के कारण प्रत्येक द्रव्य में निरंतर नई-नई अवस्थाएँ होती रहती हैं और उन प्रयोजनभूत क्रियाओं का कारण द्रव्य में होने वाला द्रव्यत्व गुण है, कोई अन्य द्रव्य नहीं। द्रव्य त्रिकाल अस्तिरूप है; तथापि वह सदा एक जैसा नहीं रहता, निरंतर नित्य परिणामी (बदलने वाला) पदार्थ है।

4. प्रमेयत्व गुण - जिस शक्ति के कारण द्रव्य किसी-न-किसी के ज्ञान का विषय हो, उसे प्रमेयत्व गुण कहते हैं।

सूक्ष्म से सूक्ष्म और अमूर्त पदार्थ, जो इन्द्रिय ज्ञान के विषय नहीं हो वे भी किसी-न-किसी ज्ञान के विषय अवश्य होते हैं। पूर्ण विकसित केवल ज्ञान में सबकुछ जानने में आ जाता है; अतः जगत का कोई भी पदार्थ अज्ञात रहे - ऐसा नहीं हो सकता है।

5. अगुरुलघुत्व गुण - जिस शक्ति के कारण द्रव्य में द्रव्यपना कायम रहता है अर्थात् एक द्रव्य दूसरे द्रव्यरूप नहीं होता, एक गुण दूसरे गुणरूप नहीं होता और द्रव्य में रहने वाले अनंत गुण बिखर कर अलग-अलग नहीं हो जाते, उसे अगुरुलघुत्व गुण कहते हैं।

अगुरुलघुत्व गुण प्रत्येक द्रव्य की पूर्ण स्वतंत्रता का उद्घोष करता है - 1. कोई भी द्रव्य अन्य द्रव्य के अधीन नहीं है। 2. एक द्रव्य दूसरे द्रव्य में कुछ नहीं कर सकता है। 3. एक द्रव्य का एक गुण उसी द्रव्य के दूसरे गुण में कुछ नहीं कर सकता है। 4. किसी द्रव्य की पर्याय दूसरे द्रव्य की पर्याय में कुछ नहीं कर सकती। 5. किसी द्रव्य की एक पर्याय उसी द्रव्य की दूसरी पर्याय में कुछ हस्तक्षेप नहीं कर सकती है।

छात्र - पर गुरुजी आपने तो बताया था कि धर्म-अधर्म द्रव्य, गति व स्थिति में; आकाश अवगाहन में और काल द्रव्य परिणमन में निमित्त है।

अध्यापक – हाँ, निमित्त तो है पर मात्र निमित्त है; सभी द्रव्य अपनी-अपनी क्रियावती शक्ति से परिणमन करते हैं, यह भी तो बताया था।

6. प्रदेशत्व गुण – जिस शक्ति के कारण द्रव्य का कोई-न-कोई आकार अवश्य हो उसे प्रदेशत्व गुण कहते हैं।

यद्यपि अमूर्तिक द्रव्यों का आकार सूक्ष्म होने के कारण हमें दिखाई नहीं देता है, पर उनके आकार हैं और वे सर्वज्ञ भगवान के ज्ञान में स्पष्ट दिखाई देते हैं।

इस प्रकार सभी द्रव्यों में ये छह मुख्य सामान्य गुण बताये गए हैं, इनके अतिरिक्त भी और सामान्य गुण पाए जाते हैं, जिनका वर्णन करना संभव नहीं है।

कक्षा में चर्चा कीजिए

- द्रव्य में सामान्य गुण न हो तो क्या होगा? विशेष गुण न हो तो क्या दोष आयेगा?
- सिद्ध भगवान अब सिद्धशिला पहुँच गए, तो उनका वक्तुत्व गुण अब नष्ट हो गया होगा?
- द्रव्यत्व गुण तथा वक्तुत्व गुण में क्या अंतर है?
- धर्म, अधर्म, आकाश और काल द्रव्य का भी आकार होता है।

क्रिएटिव राइटिंग

- अस्तित्व गुण के मानने से – ईश्वर जगत का रचयिता नहीं है – यह कैसे सिद्ध होता है?
- अस्तित्व गुण के ज्ञान से जीव भय रहित कैसे हो सकता है?
- किस गुण के न होने पर संसार कूटस्थ-नित्य हो जायेगा?
- प्रमेयत्व गुण न होने से क्या हानि होगी?
- आकाश के प्रत्येक प्रदेश पर छहों द्रव्य एक साथ रहते हुए भी एक द्रव्य दूसरे द्रव्य रूप नहीं होता, उसमें कौन-सा गुण सहायक है।
- सिद्धशिला पर जहाँ सिद्ध भगवान के आत्मा के प्रदेश रहते हैं वहीं अनन्त निगोदिया जीव भी रहते हैं। फिर दोनों के द्रव्य व गुण अलग-अलग कैसे रहते हैं?
- हूँ स्वतंत्र निश्चल निष्काम – यह किस सामान्य गुण के आधार से लिखा गया है?

सिद्ध कीजिए

- मैं कौन हूँ? इस प्रश्न का उत्तर भी प्रमेयत्व गुण के कारण ही सम्भव हो सकता है।

- किस गुण के कारण सिद्ध भगवान अमूर्तिक धर्म, अधर्म, आकाश और काल द्रव्यों को जानते हैं?

- अनादि काल से नित्य निगोद में रहने पर भी जीव का ज्ञान गुण जड़ क्यों नहीं होता?

छात्र – और गुरुजी पर्याय किसे कहते हैं?

अध्यापक – गुणों में होने वाले प्रतिसमय के परिवर्तन को पर्याय कहते हैं।

छात्र – गुरुजी! गुण परिवर्तित भी हो जाते हैं क्या? तो फिर ज्ञान गुण परिवर्तित होकर क्या हो जाता है?

अध्यापक – ज्ञान गुण परिवर्तित होकर सुख गुण नहीं हो जाता है। ज्ञान तो ज्ञान ही रहता है, वह नष्ट नहीं होता, उसकी अवस्था बदलती है। कभी अत्यंत अल्प ज्ञान तो कभी सिद्धों जैसा पूर्ण ज्ञान।

छात्र – तो परिवर्तन से क्या तात्पर्य है?

अध्यापक – सुनो! द्रव्य का लक्षण है सत् (सद्-द्रव्यलक्षणम्) और सत् व उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से संयुक्त होता है। (उत्पाद-व्यय ध्रौव्य युक्तं सत्) अर्थात् द्रव्य, उत्पाद-व्यय और ध्रौव्य वाला होता है। अब हम इन तीनों का अर्थ समझते हैं –

उत्पाद – अर्थात् उत्पन्न होना। मूल स्वभाव नष्ट हुए बिना चेतन-अचेतन द्रव्य में नवीन अवस्था का प्रगट होना उत्पाद है।

व्यय – मूल स्वभाव नष्ट हुए बिना चेतन-अचेतन द्रव्य में पूर्व अवस्था का विनाश व्यय है।

ध्रौव्य – अनादि-अनंत काल तक सदा बना रहने वाला मूल स्वभाव (जिसका उत्पाद और व्यय नहीं होता) को ध्रौव्य कहते हैं।

ध्रुवता गुण का लक्षण है और उत्पाद-व्यय पर्याय के लक्षण हैं। द्रव्य में गुण सदा से एक-से बने रहते हैं और पर्याय नित्य बदलती रहती हैं, अतः 'गुणपर्ययवत् द्रव्यम्' – ऐसा भी कहा जाता है।

छात्र – ध्रुव तो समझ में आया कि जो जैसा है, वैसा ही बने रहना ध्रुवता है, पर नवीन पर्याय का उत्पाद और पूर्व पर्याय का व्यय होने से तो गुण, गुणरूप ही नहीं रहेगा।

अध्यापक – नहीं, ऐसा नहीं है। गुण का व्यय नहीं होता है। गुणों की पर्याय का व्यय होता है, जैसे – पुद्गल में रस गुण पाया जाता है उसकी पाँच पर्यायें होती हैं – खट्टा, मीठा, कड़वा, कषैला, और चरपरा। जो उत्पाद और व्ययरूप परिवर्तन होता है, वह इन पर्यायों का होता है, जैसे – आम एक पुद्गल द्रव्य है। यदि हम उसके रस गुण के सन्दर्भ में विचार करें तो जब वह बहुत छोटा होता है तो उसका स्वाद थोड़ा कषायला होता है, थोड़ा बड़ा होने पर वह खट्टा हो जाता है और कुछ पकने पर खट्टा-मीठा लगता है और पूरी तरह पक जाने पर वह एकदम मीठा हो जाता है।

इस प्रकार रसगुण तो उसमें सदा रहा पर, उसकी कषैले से मीठी होने तक रस रूप पर्याय बदलती रही। हमने उसकी स्थूलरूप से मात्र चार पर्यायें समझीं, पर सूक्ष्मता से विचार करें तो उसके रस गुण में अर्थात् स्वाद में, प्रति समय उत्पाद-व्यय हो रहा था। इसी को पर्याय का परिवर्तन कहते हैं।

निष्कर्ष यह है कि प्रत्येक गुण की कई पर्यायें होती हैं; अतः परिणमन (परिवर्तन) पर्यायों में होता है और गुण स्वभावरूप बना रहता है; इसीलिए गुणों को ध्रुव कहा जाता है और पर्यायों को उत्पाद-व्यय रूप। गुण नित्य होते हैं और पर्यायें अनित्य।

द्रव्य, गुण-पर्यायवान् होता है। पर्याय व गुण, उत्पाद-व्यय और ध्रौव्य रूप होते हैं। जो उत्पाद व्यय और ध्रौव्य से संयुक्त होता है, वह सत् है और सत् द्रव्य का लक्षण है।

सरल भाषा में समझें तो हम इसे ऐसे समझ सकते हैं –

सारांश

जो सत् है, वही द्रव्य है।

द्रव्य, गुण और पर्याय सहित होता है।

गुण, ध्रुव (नित्य) होते हैं।

पर्याय, उत्पाद-व्ययरूप होती है। (अनित्य)

अतः द्रव्य, उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य संयुक्त सत् होता है।

स्वयं को चुनौती दें

➢ मनुष्य मर कर एक इन्द्रिय जीव बनता है – (पर्याय परिवर्तित होने से) क्या उसका ज्ञान गुण छूट जाता है?

कक्षा में चर्चा कीजिए

- जब द्रव्य के प्रत्येक गुण की पर्याय प्रत्येक समय बदलती रहती है, तब तो द्रव्य ही बदल जाता होगा।
- पर्याय निरन्तर बदलती रहती हैं अतः बुरे कार्य करने में क्या डर - क्या यह कथन सही है?
- जो सत् है उसका नाश नहीं हो सकता और जो असत् है उसका उत्पाद नहीं हो सकता, अतः विश्व में सदा छह द्रव्य ही रहेंगे।

क्रिएटिव राइटिंग

- उत्पाद-व्यय न मानने से क्या आपत्ति आएगी?
- गुणों को ध्रुव न मानने से क्या दोष आयेगा?
- रावण मोक्ष जायेंगे - यह कैसे संभव हुआ?
- यदि गुण अनित्य तथा पर्याय नित्य हो जाये, तब क्या होगा?
- एक बालक के वृद्ध हो जाने पर यह कैसे पहचाना जाता है कि 'यह वही है?'

छात्र - गुरुजी! जीव व पुद्गल द्रव्य में तो परिवर्तन देखा जाता है; पर धर्म, अधर्म, आकाश और काल में क्या परिवर्तन होता है?

अध्यापक - एक तो ये चारों द्रव्य स्वाभाविक परिणमनशील द्रव्य हैं; अतः ये स्वभावरूप ही परिणमित होते हैं, विभाव रूप नहीं। इनका परिणमन हमारे ज्ञान का विषय नहीं बनता है, वह केवलज्ञान गम्य ही है।

छात्र – ये स्वभावरूप और विभावरूप परिणमन क्या है ?

अध्यापक – स्वभाव व विभावरूप परिणमन को हम जीव व पुद्गल द्रव्य के माध्यम से समझ सकते हैं।

पुद्गल – शुद्ध परमाणु, पुद्गल की स्वभावरूप अवस्था है। दो या दो से अधिक परमाणु की मिली हुई (स्कंध) अवस्था पुद्गल की वैभाविक अवस्था है।

जीव द्रव्य – सिद्ध अवस्था जीव की स्वभावरूप शुद्ध अवस्था है और शरीर सहित होने से संसार अवस्था जीव का वैभाविक परिणमन है।

छात्र – यानी कि यदि जीवों का विभावरूप परिणमन नहीं होता तो सब सिद्ध ही होते।

अध्यापक – हाँ! अवश्य। पर जीव व पुद्गल में स्वभावतः ही अनादि से ऐसे गुण पाए जाते हैं जो स्वभाव व विभाव दोनों रूप ही परिणमित होते हैं।

इसमें विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि पुद्गल जड़ (अजीव) द्रव्य है। उसमें ज्ञान भी नहीं है और न ही वह सुख-दुःख का वेदन करता है, अतः उसके वैभाविक परिणमन से उसे कुछ फर्क नहीं पड़ता। पर जीव ज्ञान सहित होने से सुख-दुःख का वेदन करता है और विभावरूप परिणमन के कारण इस संसार में परिभ्रमण करता हुआ दुःख भोग रहा है।

छात्र – जीव विभावरूप परिणमन करता ही क्यों है?

अध्यापक – जीव स्वयं अपनी भूल से परद्रव्य के प्रति आकृष्ट होकर मोह-राग-द्वेषरूप विभाव परिणाम करता है और उसके फल में दुःखी होता है।

छात्र – द्रव्य-गुण-पर्याय का स्वरूप समझने पर समझ में आया कि भगवान ने न तो अच्छी-बुरी वस्तुएँ बनाई हैं और न ही अच्छे-बुरे प्राणी। भगवान ने तो जैसे, जो छह जाति के द्रव्य हैं उनकी जैसी, जो अनादि-अनंत स्वसंचालित वस्तु-व्यवस्था है, उसका ज्ञान हमें कराया है।

अध्यापक – और क्या समझ में आया?

छात्र – प्रत्येक द्रव्य के अपने-अपने कार्य हैं, अपने-अपने अनंत गुण हैं और उनकी अपनी-अपनी स्वतंत्र पर्यायें हैं। कोई द्रव्य दूसरे द्रव्य में उनके गुणों में और उन गुणों के परिणमन में कोई हस्तक्षेप नहीं करते हैं। हाँ, जब वे द्रव्य स्वयं परिणमित होते हैं तब उनके परिणमन में कोई अन्य द्रव्य जोर जबरदस्ती नहीं करते हैं। यहाँ तक कि प्रत्येक द्रव्य के गुणों की भी अपनी स्वतंत्र सत्ता है। वे एक-दूसरे में दखल नहीं देते हैं और गुणों की पर्याय भी अपनी-अपनी स्वतंत्रता से परिवर्तित होती हैं।

अध्यापक – आप लोगों को इन सबके जानने से क्या लाभ हुआ?

छात्र – हमें प्रत्येक द्रव्य और उनके स्वतंत्र परिणमन को समझने से यह विश्वास हो गया है कि कोई भी द्रव्य मेरा अच्छा-बुरा नहीं कर सकता है और मैं भी अन्य द्रव्यों में कुछ फेर-फार नहीं कर सकता हूँ। इससे अन्य द्रव्यों से अपने नाश का भय समाप्त हो जाता है और अन्य पुद्गल और जीव द्रव्यों में बदलाव करने की कर्त्ता बुद्धि मिट जाती है – इसप्रकार समस्त आकुलता समाप्त हो जाती है।

दूसरा छात्र – हाँ गुरु जी! हमें यही तो दुःख है कि हम पुद्गल की ओर आकृष्ट होकर पर-पदार्थों और अन्य जीवों का अपनी इच्छानुसार परिणमन करवाना चाहते हैं और वे अपनी स्वतंत्र योग्यता से परिणमित होते हैं; बस यही हमारे दुःख का मूल कारण है।

छह द्रव्यों के ज्ञान से प्रत्येक द्रव्य की स्वतंत्र परिणमन व्यवस्था समझने से और स्वयं के गुणों में सीमित होकर उन्हीं में समा जाने से हम भी सिद्ध बन सकते हैं, सुखी हो सकते हैं।

अध्यापक – हाँ बच्चो! सुखी होने के लिए सही समझ की ही आवश्यकता होती है।

कक्षा में चर्चा कीजिए

- एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ करता नहीं है – यह कैसे जाना?

- सुखी होने के लिए द्रव्य गुण पर्याय का ज्ञान आवश्यक है। सिद्ध कीजिये।

क्रिएटिव राइटिंग

- द्रव्य की परिणति विभावरूप भी होती है, ऐसा न मानने से क्या दोष आता है?

- पहले द्रव्य आया और फिर वह विभावरूप परिणमित होने लगा – ऐसा नहीं है।

स्व-मूल्यांकन

कितना समझ आया –

विषय	पूरा समझ आया	थोड़ा समझ आया	कुछ समझ नहीं आया
विश्व किसे कहते हैं?	○	○	○
द्रव्य, उसके भेद-प्रभेद	○	○	○
द्रव्यों में पाए जाने वाले सामान्य व विशेष गुण	○	○	○
गुण और पर्याय का स्वरूप	○	○	○
उत्पाद व्यय ध्रौव्य	○	○	○

छह सामान्य गुण

अस्तित्व गुण

कर्ता जगत का मानता जो कर्म या भगवान को,
वह भूलता है लोक में अस्तित्व गुण के ज्ञान को।
उत्पाद-व्ययय्युत् वस्तु है फिर भी सदा ध्रुवता धरे,
अस्तित्व गुण के योग से कोई नहीं जग में मरे।।

वस्तुत्व गुण

वस्तुत्व गुण के योग से हो द्रव्य में स्व-स्व क्रिया,
स्वाधीन गुण पर्याय का भी पान द्रव्यों ने किया।
सामान्य और विशेषता से कर रहे निज काम को,
यों मान कर वस्तुत्व को पाओ विमल श्रद्धान को।।

द्रव्यत्व गुण

द्रव्यत्व गुण इस वस्तु को जग में पलटता है सदा,
लेकिन कभी भी द्रव्य तो तजता न लक्षण सम्पदा।
स्वद्रव्य में मोक्षार्थी हो स्वाधीन सुख लो सर्वदा,
हो नाश जिससे आज तक की दुःखदायी भव कथा।।

प्रमेयत्व गुण

सब द्रव्य-गुण-प्रमेय से बनते विषय हैं ज्ञान के,
रुकता न सम्यग्ज्ञान पर से जानिये यों ध्यान से।
आत्मा अरूपी ज्ञेय निज यह ज्ञान उसको जानता,
है स्व-पर सत्ता विश्व में सुदृष्टि उनको जानता।।

अगुरुलघुत्व गुण

यह गुण अगुरुलघु भी सदा रखता महत्ता है महा,
गुण-द्रव्य को पर रूप यह होने न देता है अहा!
निज गुण पर्यय सर्व ही रहते सतत् निज भाव में,
कर्ता न हर्त्ता अन्य कोई यों लखो स्व-स्वभाव में।।

प्रदेशत्व गुण

प्रदेशत्व गुण की शक्ति से आकार द्रव्यों को धरे,
निज क्षेत्र में व्यापक रहे, आकार भी स्वाधीन है।
आकार हैं सबके अलग हों लीन अपने ज्ञान में,
जानो इन्हें सामान्य गुण, रखो सदा श्रद्धान में।।

आत्मा ही है शरण

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन का परिचय

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन विश्व की एक अद्भुत, मनोहारी व दर्शनीय रचना है। यह भारतदेश के सबसे स्वच्छ शहर व वाणिज्यिक नगरी नाम से प्रसिद्ध इन्दौर मध्यप्रदेश में स्थित है। यह रचना कृत्रिम होते हुए भी जिनागम में वर्णित अकृत्रिम ढाईद्वीप की ही प्रतिकृति है।

जिस प्रकार शास्त्रों में मध्यलोक में बीचोंबीच सर्वप्रथम जम्बूद्वीप; फिर लवण समुद्र, धातकीखण्ड द्वीप, कालोद समुद्र व पुष्करार्द्ध द्वीप स्थित हैं। उनमें पंचमेरु की रचना है, अनेकविध पर्वत, क्षेत्र, नदियाँ व अकृत्रिम चैत्यालय हैं; उनका जैसा आकार, रंग आदि का वर्णन किया गया है; उसीप्रकार इस कृत्रिम रचना में भी यथावत् चित्रण किया गया है।

इस कृत्रिम ढाईद्वीप का बाह्यरूप तो सुंदर है ही; साथ ही इसके अंदर चर्मचक्षुओं को आकर्षित करने वाले वीतराग छवियुक्त भव्य जिनबिंब विराजमान हैं। इनमें मध्यलोक के ढाईद्वीप संबंधी 398, पाँच भरत व पाँच ऐरावत क्षेत्र की त्रिकाल चौबीसी के 720, विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमान बीस तीर्थंकर दो स्थानों पर होने से 40 तथा इनके साथ अतिरिक्त 6 जिनबिंब और होने से कुल 1165 भगवन्तों की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित होकर शोभायमान हैं।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के पुण्य प्रभावना योग में मुमुक्षु समाज में अनेकविध संकुलों का निर्माण हुआ है, उनमें यह ढाईद्वीप जिनायतन अपना एक अलग ही स्थान रखता है।

लगभग डेढ़ एकड़ में फैले इस संकुल में ऊपर 18 हजार स्क्वायर फीट का विशाल ढाईद्वीप जिन मंदिर है। नीचे का सम्पूर्ण परिसर 36 हजार स्क्वायर फीट है; जिसमें विद्यमान बीस तीर्थंकर जिनालय हैं, जहाँ विश्व की सबसे ऊँची 31 इंच की स्फटिक मणि की श्री सीमंधर स्वामी, स्वर्णमय श्री आदिनाथ भगवान तथा रजतमय श्री महावीर भगवान की प्रतिमाएँ हैं।

इसी विशाल प्रांगण में 13 हजार स्क्वायर फीट का स्वाध्याय भवन है। वहीं पूज्य गुरुदेवश्री का चित्रालय व विशाल ऑडिटोरियम है। इतना ही नहीं, यहाँ 56 कमरों का आधुनिक सुसज्जित अतिथि भवन तथा 24 वन बीएचके फ्लैट्स का विद्वत् निवास भी है।

इनके अतिरिक्त 24 कमरों का एक छात्रावास है, जिसमें इस वर्ष 58 छात्र कक्षा 8वीं और 9वीं में अध्ययनरत हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए 5400 स्क्वायर फीट की विशाल भोजनशाला व 17 कमरों का स्टाफ क्वार्टर है।

प्रकृति के निकट और गोम्मटगिरि की तलहटी में हातोद रोड पर स्थित यह विशाल प्रांगण इन्दौरवासियों के लिए गौरव का प्रतीक व सम्पूर्ण जैन समाज के लिए दर्शनीय स्थल है। यह एयरपोर्ट से मात्र 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।